

नरेन्द्र मोहन के साहित्य की भाषा

सुमन देवी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

नरेन्द्र मोहन के साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता उनमें प्रयुक्त भाषा व संवादों का प्रयोग है। इनके साहित्यों में प्रयुक्त भाषा ने साहित्य की मूल संवेदना को और घनीभूत तथा सूक्ष्म बनाया है। साथ ही वह भाषा की ताकत से पूर्वतः परिचित हैं। नरेन्द्र मोहन एक समर्थ साहित्यकार हैं और इन्होंने भाषकीय दृष्टिकोण से अपने साहित्यों में कई सफल प्रयोग किये हैं। नरेन्द्र मोहन की भाषा व संवादों के संबंध में नीरू वर्मा लिखती हैं— “नरेन्द्र मोहन के शब्द रंग-शब्द हैं जो संवादों में गुंथकर दृश्य खड़ा करते हैं। छोटे-छोटे वाक्यों वाले संवाद दर्शकों तक सीधे और गहरे रूप में सम्प्रेषित हुए हैं। संवादों की सादगी तथा भाषा की पारदर्शिता साहित्य को विशिष्टता प्रदान करती है।”ⁱ

“नरेन्द्र मोहन के नाट्य प्रयोग की एक दिशा यह भी है कि जहाँ वे दृश्य-श्रव्य बिम्बों मंचीय उपकरणों का सटीक विनियोग, संवादों का पात्रानुकूल सहज और साहित्य के गठन के साथ सांकेतिकता को शैली-शिल्प के व्यूह में बाँधकर प्रस्तुत करते हैं। वहीं उनकी नाट्यभाषा में प्रयुक्त शब्द, शब्द भंगिमाएँ, वाक्य संघटन आदि पात्रों की मर्यादा और विषय के अनुकूल हैं जो औचित्य की रक्षा करते हुए संवादीय संरचना के माध्यम से कथ्य को सीधे दर्शक तक पहुँचा देते हैं।”ⁱⁱ

“नरेन्द्र मोहन एक समर्थ साहित्यकार हैं और भाषकीय दृष्टिकोण से उन्होंने अपने साहित्यों में कई सफल प्रयोग किये हैं। भाषकीय दृष्टि से उनके साहित्यों को देखें तो कोई कह ही नहीं सकता कि यह एक ही रचनाकार की रचनाएँ हैं। उन्होंने विभिन्न पृष्ठभूमि तथा विभिन्न प्रकार के जीवन से सम्बंधित साहित्य लिखे हैं। उन्होंने अपनी रुचि, परिवेश और आवश्यकता के अनुकूल भाषिक संरचना का अन्वेषण किया है।

नरेन्द्र मोहन नयी पीढ़ी के रचनाकार हैं। उनकी भाषा प्रयोग और उपलब्धि की भाषा है। उनके साहित्यों की भाषा मिश्रित भाषा है अर्थात् उनके साहित्यों में भाषा के अनेक रूप पाए जाते हैं। संवाद साहित्य के प्राण तत्व होते हैं उनके माध्यम से साहित्यकार अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है तथा साहित्य के उद्देश्य व विचार को संप्रेषित करता है। नरेन्द्र मोहन ने अपने साहित्यों में कहीं साधारण बोलचाल की भाषा, कहीं संस्कृतनिष्ठा, तो कहीं काव्यात्मक भाषा, कहीं अंग्रेजी भाषा, कहीं लोकभाषा, तो कहीं ऐतिहासिक वातावरण को सजीव बनाने के लिए तदनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

उनके साहित्यों की भाषा न फूहड़ ही है, न साहित्यिक ही अपितु प्रसंगानुकूल है अर्थात् जैसा पात्र है, प्रसंग है उसी के अनुरूप भाषा भी है। उनके साहित्यों की भाषा में प्रसंगानुकूलता के साथ-साथ उर्दू, अरबी-फारसी आदि भाषिक परम्पराओं के शब्दों की स्पृहणीय गूँजे हैं। इन्होंने बोलचाल की सामान्य भाषा के

शब्द-विधान को बड़े ही स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रक्रिया में कहीं देशज और कहीं अंग्रेजी भाषा के शब्द नए अर्थ के वाहक बनकर आये हैं।

भाषा व संवाद का प्रमुख गुण ही प्रसंगानुकूलता तथा पात्रानुकूलता होता है जो पात्र की स्थिति व द्वंद्व को उजागर करने व पात्र के चरित्र को समझने के लिए आवश्यक है। नरेन्द्र मोहन ने अपने साहित्यों में प्रसंग व पात्र के अनुकूल भाषा अपनाई है। अतः जिस प्रकार का पात्र व प्रसंग है भाषा भी उसी के अनुरूप है। उनके ‘सींगधारी’ साहित्य में प्रयुक्त प्रसंग व पात्र के अनुकूल भाषा का उदाहरण दृष्टव्य है –

सरकारी वकील : तुम पर देशद्रोह का इल्जाम है। तुमने विदेशी ताकतों से मिलकर देश के खिलाफ साजिश की। क्या तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है ? X X X X योअर ऑनर, यह चुप रहकर इल्जाम कबूल कर रहा है। और सर यह है इसका बयान-देशद्रोह का सबूत।

प्रतिवादी वकील : यह बयान इसे डरा-धमकाकर लिया गया है। योअर ऑनर, इसे बुरी तरह धमकाया गया है।ⁱⁱⁱ

उपर्युक्त संवाद में वकील अदालती भाषा का प्रयोग करता है जो प्रसंग व उसके अनुकूल है। वकील तथा जज जैसे शिक्षित लोगों ने अंग्रेजी भाषा का भी सहारा लिया है जो उनके चरित्र के सर्वथा अनुकूल है। इसी प्रकार ‘नो मैस लैण्ड’ साहित्य में भी पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग का उदाहरण दृष्टव्य है –

दफेदार-दो : चल बिशन सिंह
बिशनसिंह : कहाँ चलूँ ? यहाँ तो सब वीरान है। एक भी पेड़ नहीं।

दफेदार-दो : आगे बढ़, बिशने. . .
बिशनसिंह : कहाँ बढ़ूँ ? यह कौन सी जगह है ?

दफेदार-दो : यह बार्डर है. . .वागाह. . .
बिशनसिंह : (खुशी से) यह वागाह है।
(तुनककर) यह बार्डर क्या होता ?

दफेदार-दो : चलो, इंस्पेक्टर के पास। वह बतायेगा बार्डर क्या होता।^{iv}

उपर्युक्त संवाद में बिशनसिंह तथा दफेदार एक व दफेदार दो की भाषा का जो प्रयोग हुआ है वह प्रसंगानुकूल तथा पात्रानुकूल है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बिशन सिंह जो कि ‘बार्डर’ से

अनजान है, वह नहीं जानता कि यह क्या होता है तथा दफेदार उसे समझाने का प्रयास करते हैं।

साहित्यकार जब अपने साहित्य में सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है तब पाठक को मिलने वाला आनंद और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि भाषा जितनी सामान्य होगी पाठक उतनी ही आसानी से उस साहित्य में निहित भाव, संदेश एवं उद्देश्य को समझ पायेगा और दूसरी बात वह लेखक की मनःस्थिति के काफी निकट पहुँच जायेगा जिससे कि उसका साहित्य की तरफ रुझान बढ़ता चला जायेगा। जितना अधिक रुझान पाठकों का साहित्य की तरफ होगा साहित्यकार और साहित्य को उतना ही यश और गौरव मिलेगा। इस दृष्टि से नरेन्द्र मोहन के साहित्य सार्थक सिद्ध होते हैं, क्योंकि उनके साहित्यों की भाषा बोलचाल की है और उसमें अन्य भाषाओं के शब्दों की भरमार है, जो इसे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देने में मदद करते हैं। साहित्यकार ने प्रयत्नपूर्वक बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर वास्तविक जीवन की समस्या को प्रस्तुत किया है। साहित्य के संवादों की भाषा की संरचना इतनी सरल है कि साहित्य की विषयवस्तु को प्रेक्षक सरलता से समझ सकता है जिससे साहित्यकार और प्रेक्षक का अंतर मिट जाता है। नरेन्द्र मोहन के साहित्य 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' में प्रयुक्त सामान्य बोलचाल की भाषा का उदाहरण दृष्टव्य है –

कबीर : सेना, इतने घबराए हुए क्यों हो ?

सेना : उधर चौक में हिन्दु-मुसलमानों में झगड़ा क्यों हो गया। मारे गये बेचारे जुलाह-पट्टी के कुम्हार, मोची, कसाई, जुलाहे, चमार।

कबीर : कब ?

सेना : अभी एक घंटा पहले। मैं वहीं था। कुम्हारों, जुलाहों को भद्दी गालियाँ दी गयीं। तुम्हारा नाम भी बीच-बीच में आता रहा।

कबीर : मेरा नाम

सेना : हाँ, कह रहे थे यह सब कबीर का करा-धरा है। उसी ने इन कमीनों का दिमाग आसमान पर चढ़ा रखा है। मुझ पर एक ब्राह्मण यों लपका जैसे खा जायेगा। मैं किसीतरह से बच निकला।^अ

उपर्युक्त संवादों में प्रयुक्त भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा है। जो रंगकर्ताओं को प्रेक्षक समुदाय से अलग नहीं करती। नाट्यकर्मि नरेन्द्र मोहन की रंगमंच सम्बन्धी गहन अनुभूति इस बोलचाल के लहजे में जैसे साकार हो उठी है।

नरेन्द्र मोहन के साहित्य 'अभंगगाथा' में भी सामान्य बोलचाल की भाषा के प्रयोग का उदाहरण दृष्टव्य है –

तुकाराम : कैसे बात करती हो, जिजाई।

जिजाई : क्या बुरा कह दिया मैंने?

तुकाराम : तनी हुई रस्सी को इतना न तानो कि

वह टूट जाये।

जिजाई : मुझसे तंग आ गए हो।

तुकाराम : तुम्हें रूखमा को सताकर क्या मिलता

है ?

जिजाई : तुम्हें मुझे सताकर क्या मिलता है ?

तुकाराम : मैंने तुम्हें क्या सताया ?

जिजाई : बड़ा सुख दिया है न! तुम्हें हमेशा

रूखमा दिखी, मैं न दिखी।

तुकाराम : मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा।

जिजाई : तो सोचो! तुम्हारे चाहने, न चाहने से बंधी तुम्हारी बांदी नहीं हूँ, गले पड़ी हुई नहीं हूँ कि फालतू मान लो। मेरा कसूर बताओ ?^{vi}

तुकाराम और जिजाई के मध्य हुए इन संवादों में किसी भी प्रकार की क्लिष्ट भाषा का प्रयोग नहीं किया गया है, अपितु यह जनसाधारण में प्रयुक्त होने वाली सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में दृष्टिगोचर होती है। अतः नरेन्द्र मोहन के साहित्यों की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा होते हुए भी सर्जनात्मक शक्ति से पूर्ण है। जिसके कारण इनके साहित्य जनसाधारण से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं।

भाषा काव्य-शिल्प का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। नयी कविता के कवियों ने अन्य शिल्प तत्त्वों की भाँति भाषा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया है। भाषा को अपर्याप्त पाकर विराम संकेतों, उनको और सीधी-तिरछी लकीरों, सीधे-उल्टे, अधूरे वाक्यों की शरण लेनी पड़ती है।

नरेन्द्र मोहन जी वाणी के धनी थे ही अनुभूति की तीव्रता भी उनमें कम नहीं रही। कभी-कभी उनकी अनुभूति इतनी तीव्र हो गयी है कि उसकी अभिव्यक्ति के लिए शब्द भी जवाब दे गये हैं।

उनकी कविताओं में धरती के दुःख को दूर करने की बेचैनी, संघर्ष और उसके प्रति अगाध प्रेम को देखा जा सकता है।

नरेन्द्र मोहन ने मुक्त छन्द को ज्यादा अपनाया है, जिसमें उनकी भाषा, शब्द और लय से पूर्ण है। उनके शब्द-विधान का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है –

आरंभ में उर्दू भाषा को ही कविता की भाषा माना जाता था। शायद इसी का परिणाम है कि आज की कविता में उर्दू शब्दावली का प्रयोग होता है। विवेच्य कविवर नरेन्द्र मोहन के काव्य में भी उर्दू भाषा का प्रचुर प्रयोग मिलता है। उर्दू शब्दों के प्रयोग में कवि की कविताओं के अतिरिक्त भाव-सौन्दर्य तथा माधुर्य उत्पन्न हो गया है, फिर भी उनकी अनुभूति अपने यथार्थ रूप में ही प्रकट हुई है। उदाहरण के लिए हम निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं जो उनकी कविता 'एक अग्नि कांड जगहें बदलता' से ली गई है। यथा—

खैर, आजादी का बात फिलहाल छोड़िए

बात हँसी फूटने से पहले और आजादी से पहले की है—

तब मैं पाँच साल का था और लाहौर में था

यूसुफ मौलवी हमें पराया करते थे

हिसाब गिनती जमा, जब और तकसीम

और पाँच साल बाद जब मैं दर्जा पाँच में हुआ तो

मैंने उसे बहुत परेशान देखा^{अपप}

विषय की प्रमाणित के लिए उनकी कविता से कुछ और पंक्तियों द्रष्टव्य हैं –

कहना मुश्किल है कि

वारिस शाह क्यों याद आ गया उन्हें उस वक्त और

अमृता के बोल:

अज आखां वारिस शाह नू, कितों कबरों विचों बोल

ते अज किताबे इश्क दा कोई अमला वरला फोल^{viii}

इस प्रकार कविवर नरेन्द्र मोहन ने यथा स्थान विषयानुरूप एवं भावानुरूप उर्दू शब्दों का प्रयोग कर अपनी बात को अधिक तख्ती एवं पैनेपन से रखी है, जिसमें कवि को अपार सफलता भी मिली है।

नरेन्द्र मोहन ने अपनी कविताओं में तत्सम शब्दों का भी यथास्थान प्रयोग किया है। इनकी कविताओं में प्रयुक्त तत्सम शब्द दूसरे तद्भव एवं देशज शब्दों की संगति पाकर अत्यधिक प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं। उदाहरण के लिए हम कविवर नरेन्द्र मोहन की निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं जिसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग देखते ही बनता है। यथा—

उसके पास शब्द है कटे-फटे
ध्वनियाँ है बिखरी हुई
स्वर-लय-ताल
विषम रागों में निबद्ध
अव्यवस्थित
संतुलन हीन
वह सुनता है रागनियाँ
अपार्थिव, अलौकिक, स्वप्निल
बेगाने देश की^x

इस तरह हम कह सकते हैं कि कविवर नरेन्द्र मोहन ने विषयानुरूप शब्दों का चयन कर अपनी कवित्व शक्ति से परिचय करवाया है। उनके काव्य में तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशज शब्दों का प्रसंगानुकूल प्रयोग हुआ है। कवि ने अपने भावों को समाज एवं परिस्थितिनुरूप विभिन्न भाषाओं के शब्दों के माध्यम से रूपायित करने में पूर्णतः सफलता पाई है।

आज की कविता में अंग्रेजी शब्दों का चलन भी बढ़ गया है। रोज-मर्रा की जिन्दगी में आम आदमी भी अनेक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करता है। कवि ने भी भाव की प्रबलता के लिए विषयानुरूप अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रचुर प्रयोग किया है। यथा—

‘यूसूफ फायर स्टेशन के सामने पड़ा है एक तरफ थाना है दूसरी

तरफ
थियेटर! पटेल रोड़ की और से भागे आ रहे लोगों के हजूम और
बसों, ट्रकों, स्कूटरों, मोटर-साइकिलों के धड़धड़ाते रेलों की

और देखता रहता है गिचमिच-गिचमिच
एक जलूस ऊँटा पड़ा है थाने और थियेटर के बीच
तने हुए चेहरे और घुड़सवार पुलिस
उसने बीड़ी सुलगा ली है वह घिसटता हुआ बढ़ रहा है
उस नौजवान की ओर^x

बिम्ब काव्याभिव्यक्ति का एक अपरिहार्य उपादान है। बिम्ब-विधान के बिना काव्य-रचना और काव्य-सम्प्रेषण बहुत कठिन है। इसी अपरिहार्यता को भावित करके हरवर्ड रीड ने लिखा था कि काव्य तर्क को तो तज सकता है, लेकिन बिम्ब को नहीं। बिम्ब को न छोड़ पाने का कारण अर्थ-ग्रहण है क्योंकि काव्य में बिना बिम्ब-ग्रहण सुगम नहीं है। अस्तु: नातिविस्तार में यह जान लेना आवश्यक है। कि आखिर यह बिम्ब है क्या? सामान्य रूप से

मूर्ति, चित्र, छाया, झलक, आकृति, प्रतिबिम्ब आदि बिम्ब के शाब्दिक अर्थ के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

परन्तु बिम्ब को समझने के लिए ‘इमेज’ को समझना अनिवार्य है, क्योंकि बिम्ब अंग्रेजी को ‘इमेज’ का हिन्दी रूपान्तर है। ‘शार्टर ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी’ इमेज का अर्थ किसी पदार्थ का मानचित्र या मानसी प्रतिकृति बताया है। रचनाकार इस उपादान का आश्रय लेकर रूपों को मूर्त तथा इन्द्रियग्राह्य बनाता है। अतः कहा जा सकता है कि काव्य-बिम्ब ऐसे शब्द-चित्र हैं, जिनमें अमूर्त भावना, विचार या रूप की पुनर्सृष्टि होती है।

डॉ० नगेन्द्र ने बिम्बों पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने बिम्बों के भेदों पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। यद्यपि भिन्न-भिन्न विद्वानों ने बिम्बों को अनेक भेदों एवं उपभेदों में बांट कर उनका विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत किया है परन्तु डॉ० नगेन्द्र ने ऐन्द्रिय माध्यम के आधार पर बिम्ब के पाँच भेद माने हैं।

काव्य बिम्ब के भेद हैं—

1. दृश्य बिम्ब
2. नाद बिम्ब
3. स्पृश्य बिम्ब
4. गन्ध बिम्ब
5. आस्वाद्य बिम्ब

गंध बिम्ब मानव की नाक से जुड़ा है। अर्थात् जिस कविता में मानवक की नाक सुगन्ध या दुर्गन्ध अनुभव करती है वहीं गन्ध बिम्ब की सृजना होती है। नरेन्द्र मोहन ने भी अपने काव्य में गंध-बिम्ब का यथास्थान प्रयोग किया है। उनके अनेक कविताओं में इस कोटि का सौन्दर्य देखते ही बनता है। उदाहरण के लिए हम विवेच्य कवि की निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं। यथा—

तुम सूँघकर आदमी की जात पहचान लेते हो
तुम्हारी संवेदनशील नाक को
पता चल जाता है
किधर चलना ठीक होगा
और तुम सूँघते हुए वहाँ
पहुँच जाते हो^{xi}

इसका संबंध त्वचा से होता है। इसमें पदार्थ की कोमलता, कठोरता, चिकनापन आदि समाहित होता है। नरेन्द्र मोहन ने भी इस बिम्ब का यथास्थान प्रयोग किया है। विषय की प्रमाणिकता हेतु कवित की कविता पेड़ से निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

उनके कानों के पास
कुछ नहीं रेंगा
रेंगता ही नहीं
अब पहले रेंगता था/कीड़ा
सफेद कबूतरों के पंखों के बीच
पड़ा है मरा^{गप्प}

यह बिम्ब मनुष्य की जीभ से जुड़ा होने के कारण इसको आस्वाद्य बिम्ब कहते हैं। इसमें भोजन के विभिन्न अव्ययों, मिठाईयों, फलों, पेया आदि का सहारा लिया जाता है। विवेच्य कविवर नरेन्द्र मोहन ने इस बिम्ब का भी यथास्थान प्रयोग कर अपनी लेखनी की शक्ति से हमारा परिचय करवाया है। जैसा कि कवि ने लिखा है —

देखती है
फटी आँखें चारों तरफ
उसे कुछ नहीं सूझता

सूखे होंठों से फुसफुसा रही है पानी-पानी
 मैं क्या करूँ
 कुएँ में झाँककर देखता हूँ
 एक गोलाकार खालीपन
 एक चक्राकार सूनापन
 दीवारें काली है
 पानी काला है
 काली वे दिशाएँ
 तेंदुआ चबा रहा है जबड़ों में
 देश और काल^{xiii}

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कवि ने अपनी कविताओं में आस्वाद्य बिम्ब का प्रयोग भी किया है। यद्यपि यह बिम्ब कवि की कविताओं में अन्य बिम्बों की तुलना में कम ही आया है। फिर भी हम कह सकते हैं कि कवि ने आस्वाद्य बिम्ब का प्रयोग भी बड़ी बारीकी से करते हुए अपने सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है।

प्रकृति हमेशा से ही कवियों की पहली पसंद रही है। प्रकृति के बिना कविता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रकृति ही कवि की कल्पना को सार्थक बनाती है। जिस कवि की कविता में प्रकृति का जितना उदात्त रूप चित्रित होगा वह कवि उतना ही स्वच्छ प्रभाव अपने पाठकों पर डाल सकेगा। विवेच्य कवि ने भी अपने भावों को प्रकृति के माध्यम से सामान्यजन तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है। कवि ने 'जंगल' नामक कविता में प्रकृति का सहारा लेते हुए तत्कालीन वातावरण को प्रकृति बिम्ब के माध्यम से आरेखित करते हुए लिखा है –

मेरे साथ-साथ
 भांग रहा
 जंगल
 दोनों तरफ
 और मैं सीधा सुरक्षित रास्ता छोड़
 भाग जाना चाहता हूँ
 जंगल में
 एक जंगल चित्र में
 एक चित्र से बाहर
 मैं बाहर आ खड़ा हुआ हूँ चित्र से
 जंगल में
 कौन है यहा मेरा साया
 पुकारता मुझे^{xiv}

साहित्यकार नरेन्द्र मोहन ने मिथकों के रहस्यों को समझा, पहचाना और अपनी नाट्य रचनाओं में पूरी क्षमता से संदर्भित करने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में सामयिक स्थितियों और समस्याओं के स्पष्टीकरण, इतिहास एवं साहित्यीय संवेदना को अभिव्यक्ति मिथकीय प्रयोगों द्वारा ही मिली है।

नरेन्द्र मोहन का अधिकांश साहित्य ऐतिहासिक मिथक पर आधारित है जिसमें से प्रमुख मिथकाश्रित साहित्य है- 'कहै कबीर सुनो भाई साधो', 'कलन्दर', 'सींगधारी', 'नो मैस लेण्ड', 'अभंगगाथा' तथा 'मलिक अंबर' आदि जिनमें मिथकों का प्रयोग प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। नरेन्द्र मोहन ने 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' साहित्य में कबीर के ऐतिहासिक चरित्र को उसकी मिथकीय सीमाओं में रखते हुए आधुनिक अर्थवत्ता प्रदान करने की चेष्टा की है।

प्रस्तुत साहित्य में कबीर युग की विसंगतियों एवं कबीर द्वारा उनके प्रतिकार के प्रयास का चित्रण किया गया है। विवेच्य साहित्य का काव्य है- कबीर के मिथक के माध्यम से सत्य का उद्घाटन करना। साहित्य की संवेदना में छुआछूत, जातिवाद, सांप्रदायिकता, शासन के दुराचारों, शोषण आदि पक्षों के आवरण द्वारा सच्चाई पर जो पर्दा पड़ा है कबीर उसे उठाते हैं। झूठ का प्रचार कर अपन उल्लू सीधा करने वालों के विरोध में कार्यरत रहते हैं। गायक-गायिका जन-मसाज के समश्र कबीर विषयक जिन धारणाओं को रखते हैं वे इस प्रकार हैं। उदाहरणार्थ-

“लाली मेरे लाल की, जित देखो तित लाल।

लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गयी लाल।।”^{xv}

गायक-गायिका कबीर के जिन भावों को गाकर प्रकट करते हैं उनमें आध्यात्मिक विषयों के साथ ही कबीर का समाज से सीधा टकराने वाला कर्मयुक्त रूप उभर कर आ जाता है। इसमें नरेन्द्र मोहन ने कबीर के पदों के साथ-साथ कुछ अपने द्वारा रचित दोहों को भी सम्मिलित करके भावों व संवेदना को और भी गहन बना दिया है। उदाहरणार्थ-

‘उल्टी-सीधी नहीं कहानी

जन-जन की भाषा में

यह जन-जन की गाथा

बाधाओं-तकलीफों से लड़ता-लड़ता

लोगों के दुःख दर्द का भागीदार बना वह

राह अकेली छोड़

मिल गया वह लोगों में”^{xvi}

साहित्य में गायक-गायिका, कबीर के अन्य संगी-साथी, रमजनिया आदि चरित्रों का सहज ही क्रिया-कलाप, तथ्य से सत्य तक की यात्रा को अंजाम देता है। वे मानते हैं कि कबीर का जीवन प्रवाहमय था। कबीर के व्यक्तित्व उनके समय का समाज, धर्म और राजनीति परिवेश, सब के सब साहित्यीय गति में ढलते दिखाई देते हैं। नरेन्द्र मोहन द्वारा कबीर के मिथक को साहित्य का विषय बनाये जाने के कारण भी कबीर की जीवन परिवेश विषयक संवेदना ही है।

अलंकार वाणी की शोभा है, वाणी के विभूषण हैं। काव्य में अलंकारों की महिमा निर्विवाद है। किसी भी तथ्य, अनुभूति, घटना या चरित्र की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए अलंकारों का उपयोग होता है।

अलंकार पूरक अलंकार्य का अलंकार साधन और अलंकार्य साध्य है। काव्य के शरीर, शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ाने वाला धर्म है अलंकार, भाषा-सौन्दर्य के वृद्धि के कारक हैं – अलंकार। अलंकार कविता की सौन्दर्य-वृद्धि में सहायक है, कविता की सौन्दर्य-वृद्धि भी अलंकारों के द्वारा होती है।

‘अलंकार लक्षण’ नामक नाट्यशास्त्र के एक अध्याय में भरतमुनि ने अलंकारों के सम्बन्ध में लिखा है –

अलंकारे गुणश्चैव बहुभि समलंकृतम्।

भूषणोति विन्यस्तैरतद् भूषणामिति स्मृतम्।^{xvii}

शब्दालंकार नाद सौंदर्य के प्रतिपादक होते हैं जिससे श्रुति मधुरता आती है। नरेन्द्र मोहन ने अपने काव्य को विविध प्रकार के शब्दालंकारों से सुसज्जित किया है। अनुप्रास अलंकार- ‘अनुप्रास’ अनु+प्र+आस’ शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है – अनु

(पीछे-पीछे), प्र (प्रकृष्ट वर्णों का), आस (सन्निवेश) अर्थात् जब एक ही व्यंजन वर्ण या कई व्यंजन वर्ण एक वाक्य में बार-बार आए तब अनुप्रास अलंकार होता है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है –

राम राजा है और राजा राम है^{xviii}

X X X

पपित पावन सीता राम की मोटी खाल ओढ़।^{xix}

X X X

मुट्टी मारकर मेज पर/उठा सकता हूँ आवाज प्रतिरोध में।^{xx}

X X X

तुम्हारे साहस की कद्र करेंगी/ कि तुमने व्यवस्था को एक मोटी और भद्दी गाली दी थी।^{xxi}

X X X

याद आता शहर बचपन का/ याद आते दोस्त जिनसे खेलता, लड़ता, झगड़ता था।^{xxii}

X X X

नरेन्द्र मोहन ने अपने काव्य में यथास्थान स्वाभाविक अलंकारों की छटा बिखेरी है। उनके काव्य में प्रयुक्त अलंकारों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

जहाँ वर्णों की बार-बार आवृत्ति होने से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। विवेच्य कवि ने भी अनुप्रास का बड़ा दर्शनीय प्रयोग किया है। उनकी कविता 'दफन होते हुए' की निम्न पंक्तियों को देखा जा सकता है, जिसमें अनुप्रास का अत्यन्त स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। यथा—

बेहतर जिन्दगी जीने की आदत डालना

और आत्महत्या करना

एक—सा क्यों दिखता है उसे

बाहर जरूर कुछ गड़बड़ है

भीतर जरूर कुछ पिचका

वह रोते—रोते

हँसने लगता है

हँसते—हँसते हकलाने लगता है

हकलाते—हकलाते एक चुप्पी में दफन होने

और दफन होते हुए

तालियाँ बजाने^{xxiii}

भाव और प्रभावोत्पादकता में वृद्धि करने के लिए पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग होता है। कविवर नरेन्द्र मोहन के काव्य में पुनरुक्ति प्रकाश का बड़ा ही मनोहारी चित्रण देखने को मिलता है। 'चाकू की धार' नामक कविता में कवि ने उपर्युक्त अलंकार का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है। यथा—

पहाड़ों से घिरे—घिरे

पहाड़ों के बीच

पहली बार देखा

नंगा और ठोस

सन्नाटे का शरीर

X X X

काटती, तार—तार करती

सन्नाटे का संसार।^{xxiv}

इसमें उपमान एवं उपमेय की समानता की जाती है। यह कवियों का सर्वाधिक प्रिय अलंकार होता है। नरेन्द्र मोहन ने भी उपमा अलंकार का अपने काव्य में स्थान-स्थान पर प्रयोग कर अपनी कवित्व शक्ति का परिचय दिया है। उदाहरण के लिए हम कवि की कविता 'सागर में' की निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं –

पिंघलती हुई चांदी को

भीतर से फोड़

बरगत—सी

छितरा रही

पहाड़ियाँ^{xxv}

पाठक को आश्चर्य चकित एवं बौद्धिकता उत्पन्न करने हेतु इस अलंकार का सहारा लिया जाता है। जिस अलंकार में प्रश्न किया गया हो, वहाँ प्रश्न अलंकार होता है। नरेन्द्र मोहन ने भी अपने काव्य में प्रश्न अलंकार का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए हम उनकी निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं। यथा—

पहुँच जाता है. . .

कीचड़ और छुरे और लाठियाँ

लाठियाँ और छुरे और कीचड़

यह कौन है

क्या वह स्वयं

क्या उसका हमशक्ल?^{xxvi}

जब सौंदर्य किसी वाक्य के शब्दों की अपेक्षा उसके अर्थ में निहित हो तो वहाँ अर्थालंकार होता है। काव्य में अर्थालंकारों का बहुत अधिक महत्त्व है। आधुनिक काव्य में कल्पना, भाव और विचार-वैभव की तुलना में अलंकारों को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता, किन्तु फिर भी काव्य में अलंकार कहीं-न-कहीं स्वतः ही आ जाते हैं। नरेन्द्र मोहन ने भी अपनी कविताओं में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह आदि अलंकारों की मालिका पिरोई है –

अर्थालंकारों में उपमा सबसे प्रधान अलंकार है। इसे अर्थालंकारों का मूल माना जाता है। कवियों और आचार्यों ने इसे काव्य की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति माना है। यहाँ तक कि कुछ विद्वान इसे कविकुल की माता के समान समझते हैं—

पिंघलती हुई चाँदी को/भीतर से फोड़

बरगद—सी/छितरा रही पहाड़ियाँ^{xxvii}

X X X

बुजदिल—सा मायूस पड़ा रहता हूँ और

यह मायूसी खत्म होने में नहीं आती

सोचता हूँ जितना, करता नहीं उतना।^{xxviii}

X X X

सृजन क्या है मेरे लिए ?/एक कील—सा गढ़ता

नाल—सा टुकता/साँस की एकतानता

एक बिन्दु पर एकाग्र/ध्यान ढलता समाधिक में।^{xxix}

जहाँ उपमान की अपेक्षा घटाकर बताया जाए, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। नरेन्द्र मोहन ने अपनी कविताओं में प्रतीप अलंकार की छटा बिखेरी है –

चाँद कभी दिखता था कसाई—सा

विरहिणी नायिकाओं को

अपनों से बिछुड़े हुए लोगों को

हर चौराहे पर कसाई नजर आते हैं

ये डरने लगे हैं और चाँद और चाँदनी से^{xxx}

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नरेन्द्र मोहन ने अपने साहित्य की यात्रा में भाषा के सभी अंगों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है और अपने साहित्य को बड़ा ही लचीला बना दिया है भाषा के अंगों का प्रयोग करके उन्होंने अपने साहित्य को चार चाँद लगा दिये हैं।

संदर्भ सूची

- i डॉ० गुरुचरण सिंह, नया परिदृश्य : नरेन्द्र मोहन के नाटक, पृ० 45
- ii वही, पृ० 80
- iii नरेन्द्र मोहन, सींगधारी, पृ० 67
- iv गुरुचरण सिंह, सुमन पंडित, नरेन्द्र मोहन रचनावली-2, पृ० 277-278
- v गुरुचरण सिंह, सुमन पंडित, नरेन्द्र मोहन रचनावली-2, पृ० 128
- vi वही, पृ० 317
- vii सं० गुरुचरण सिंह, सुमन पंडित, नरेन्द्र मोहन रचनावली, खण्ड-2, पृ० 197-198
- viii वही, पृ० 201
- ix सं० गुरुचरण सिंह, सुमन पंडित, नरेन्द्र मोहन रचनावली, खण्ड-1, पृ० 131
- x वही, खण्ड-1, पृ० 208
- xi सं० गुरुचरण सिंह, नरेन्द्र मोहन रचनावली, खण्ड-1, पृ० 74
- xii वही, खण्ड-7, पृ० 82
- xiii वही, खण्ड-1, पृ० 320
- xiv वही, पृ० 331
- xv वही,, खण्ड-2, पृ० 100
- xvi वही, पृ० 122-123
- xvii डॉ० रामसजन पाण्डेय, कवि हरमहेन्द्र सिंह बेदी पुस्तक से, पृ० 79
- xviii गुरुचरण सिंह, सुमन पंडित, नरेन्द्र मोहन रचनावली-1, पृ० 71
- xix वही, पृ० 82
- xx वही, पृ० 87
- xxi वही, पृ० 89
- xxii वही, पृ० 260
- xxiii वही, खण्ड-1, पृ० 134-35
- xxiv वही, पृ० 266
- xxv वही, पृ० 126
- xxvi वही, पृ० 207
- xxvii वही, पृ० 126
- xxviii वही, पृ० 118
- xxix वही, पृ० 341
- xxx वही, पृ० 270